NMHS
National Mission on Himalayan Studies

SIMAR

तकनीकी पुस्तिका
रोजमैरी उत्पादन

संकलन

सिमार, हाट कल्याणी, देवाल, चमोली, उत्तराखण्ड।

सहयोग- गोबिन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सततृ विकास संस्थान, कोसी, कटारमल, अल्मोडा।

रोजमैरी की खेती

रोजमैरी एक बहुवर्षीय फसल है जिसको कि व्यवसायिक रूप से १०-१२ वर्षो तक एक बार बोने के पश्चात उपयोग किया जा सकता है। इसकी खुश्बू चाय जैसी होती है।

उपयोग यह **मॉस** (विशेषकर चिकन, मछली, बकरी), टमाटर आलू की सब्जी, मशरूम चीज अण्डा, विनेगर, दाल, चावल, सब्जियों व बेकरी उत्पादों तथा हर्बल बटर में प्रयोग की जाती है। इसकी पत्तियां तनाव, माइग्रेन, लीवर और पाचन सम्बन्धी विकारों में लाभकारी है। नसों के दर्द, गठिया, खुजली और हल्के घावों में इसका मरहम भी बनाया जा सकता है बाल धोने और मुंह कुल्ला करने में भी इसका उपयोग होता है। इसका सुगन्धित तेल साबुन, कीम, लोशन, इब्र टह्यलेट वह्टर बनाने में इस्तेमाल होता है इसकी सूखी सुगन्धित पत्तियों का उपयोग हर्बल स्नान, मुख को भाप देने, बाल धोने और रंगने में किया जाता है। रोजमेरी का फूल बहुत ही आकर्षक होता है इसको घर की शोभा बढ़ाने के लिए भी घर के आगे लगाया जाता सकता है।

उपयुक्त भाग : पत्तियां, फूल और सुगन्धित तेल।

जलवायु : यह ठण्डी जलवायु की फसल है इसकी खेती समुद्रतल से ६००-२५०० मी० तक की ऊचाई पर सफलतापूर्वक की जा सकती है । इसके लिए ३०० सेमी० तक वर्षा की आवश्यकता होती है।

भूमि : रोजमेरी की खेती के लिए उचित जल निकास वाली दोमट भूमि उपयुक्त मानी गई है भूमि का पी० एच० मान ५.५ से ७.० उपयुक्त माना गया है।

खाद की आवश्यकता : ३०० किग्रा० गोबर की खाद प्रति नाली आवश्यक होती है।

फसल समय सीमा : ५-१० साल।

प्रवर्धन : रोजमेरी का प्रवर्धन बीज कलम, लेयरिंग या प्रभाग द्वारा किया जाता है कलम द्वारा प्रवर्धन करने के लिए रोजमेरी के पौधे पर फूल आने से पूर्व १०-१५ से लम्बाई की कलमे काट लेते है इन कलमो से सारी पत्तियां निकाल कर ३ प्रतिशत पंचगव्या के

घोल या १० प्रतिशत सी० पी० पी० घोल में लगभग २० मिनट तक डुबाकर पहले से तैयार पहली बैग जिसमे कि १:१:२ के अनुपात में गोबर की खाद रेत, मिट्टी का मिश्रण भरा गया हो मे इन कलमो को रोपित कर देते है। इन पहली बैगों को छायादार स्थान पर रखना चाहिए तथा प्रतिदिन दो बार सिंचाई करनी चाहिए इस प्रकार से ६० दिन मे रोजमेरी की पौध मुख्य खेत मे प्रतिरोपित करने हेतु तैयार हो जाती है।

बुआई का उचित समय : वर्षा आधारित क्षेत्रों में जून-जुलाई, सितंबर-अक्टूबर में करनी चाहिए।

पौध रोपण : मुख्य खेत मे पौध/कलमो को पंक्ति x पौध ४५ x ४५ से० की दूरी पर रोपित करना चाहिए पौध रोपण के छह माह पश्चात पौध की मुख्य शाखा को हटा देना चाहिए ताकि अन्य शाखाओं की अच्छी तरह वृद्धि हो सके ।

भूमि की तैयारी : भूमि की दो तीन जुताई करके मिट्टी को भूरभूरा बना लेना चाहिए जिसमे कि पंक्ति पौध ४५ x ४५ से०मी०, ६० x ४५ से०मी० की दूरी पर पौधो का रोपण किया जा सकता है।

पौध सुरक्षा : रोजमेरी की फसल में कीट एवं रोगों का आकमण बहुत कम या नगण्य होता है।

कटाई का समय : साल में तीन बार

सिंचाई : रोजमेरी की फसल असिचिंत क्षेत्रों मे बिना पानी के भी सफलता पूर्वक हो जाती है अत्यन्त सूखे की स्थिति मे पत्तियों की वृद्धि हेतु सिचाई करनी आवश्यक है।

निराई गुडाई : पहली निराई गुडाई फसल बोने के एक माह बाद करनी चाहिए तथा साल मे कुल चार से पांच बार निराई गुडाई खरपतवार नियंत्रण एंव मृदा मे वायु के संचार हेतु आवश्यक है।

कटाई की पद्धति : फूल खिलने के समय पर इसके पत्तों को काटा जाता है। फसल के प्रथम वर्ष में पहली कटाई फसल रोपण के २१५ दिन बाद करनी चाहिए इसके पश्चात प्रतिवर्ष तीन कटाइया चार महीनो के अन्दर मे करनी चाहिए ।

प्रक्रिया : फूल खिलने से पहले शाखाओं को काटकर सुखा लें। शाखाओं को इच्छानुसार काटकर पौधे को आकार दे सकते हैं बन्डल बनाकर हवादार स्थान पर इसे उल्टा करके लटका दें। सूखने पर डन्ठल से पत्तियां अलग कर दें। पत्तियों के टुकड़ों को हवामुक्त डिब्बे में संरक्षित कर लें। इसे कच्चा भी उपयोग किया जा सकता है।

पौध के भाग का आवश्यक उत्पादन : २००-३०० किग्रा० प्रतिनाली हरा

४०-४५ किग्रा० प्रतिनाली सूखा

संभावित उपज/लाभ : रोजमैरी की अच्छी खेती से प्रति नाली २०० किग्रा६ ताजी पत्तियां डन्ठल सहित प्राप्त होती हैं जो सूखने तथा साफ होने के बाद ४०-४५ किग्रा६ बचती हैं इस प्रकार समस्त खर्च १७०० रुपये काटकर व बाजार भाव १७५ रु० प्रति किग्रा६ मिलने पर ५८०० रुपये का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कृषिकरण लागत

प्रति नाली लागत		
१	भूमि तैयारी	२००
२	रोपण सामग्री	७५०
३	गोबर की खाद	२२५
४	पौध संरक्षण	२५
५	इन्टरकल्चर	२५०
६	कटाई और प्रोसेसिंग	२५०
	कुल रु	१७००

विकी मूल्य प्रति किग्रा - १७५.००

प्रति नाली कुल अनुमानित लाभ - ७५००.००

प्रतिनाली शुद्ध लाभ - ५८००.००